

## 6वाँ दोहा प्रजातंत्र मंच में प्रथम उप प्रधान मंत्री के प्रभाषण

कत्तर के प्रथम उपप्रधान मंत्री एवम विदेशकार्य मंत्री माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी ने प्रजातंत्र के मौलिकता के बारे में जोर की। उन्होंने कहा कि इसके लक्ष्य सामाजिक इनस्फ के परिपालन करना है। माननीय प्रथम उप प्रधान मंत्री ने कहा कि संस्थापनों, मानव अवकाशों, प्रशासन में जनता के हिस्सेदारि और सक्रियता के पारदर्शनियता से ही एसे राष्ट्र के निर्माण हो सकते हैं।

प्रजातंत्र, विकास और मुक्त व्यापार के 6वाँ दोहा मंच में बुधवार, 12 अप्रैल 2006 को प्रभाषण करते हुए ममाननीय प्रथम उपप्रधान मंत्री एवम विदेशकार्य मंत्री माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी ने कहा कि प्रजातंत्र सिर्फ एक औपचारिक क्रिया नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र के विजय के लिए एस संपूर्ण विकास योजना होना चाहिए जिससे राज्य के आर्थिक एवम सामाजिक क्षेत्र के विकास के लिए एक प्रारूप होना ज़रूरी है। उन्होंने कहा सिर्फ इसी मार्ग से ही किसी भी राज्य में प्रजातंत्र के विजय होगा।

आतंकवाद के निर्वचन के बारे में बताते हुए माननीय प्रथम उपप्रधान मंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सभा ने इस को अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से साथ नाता रखते हैं। इस तरह के आतंकवाद कई से निर्दोषियों के जीवन को खतरा होते हैं और मौलिक स्वतंत्र्य को धमकाते हैं। उन्होंने कहा कि अभी तक अंतर्राष्ट्रीय समूह ने आतंकवाद को निर्वाचित नहीं किए हैं। अगर एसे निर्वचन करने में सहमत होगो तो भी आतंकवाद को तत्वप्रदान विचारों से शक्ति हासिल करते हैं जिसे लोगों पर हिंसा और आतंक पैदा करते हैं।

माननीय प्रथम उपप्रधान मंत्री एवम विदेशकार्य मंत्री माननीय शेख हमद बिन जासेम बिन जाबर अल थानी ने चेतावनी दिया कि गरीबी, अत्याचार और नैशर्य से आतंकवाद जन्म होते हैं। उन्होने कहा कि इसे लोग शहीदी और त्याग के विचार होते हैं जिससे कई जीवन के नाश होते हैं जिसमें अपराधकर्ता भी शामिल होते हैं। उन्होंने कहा कि इन अपराधकर्ताओं के नज़ में यह सिर्फ एक आसान और न्यायिक क्रिया है जिसे मौलिक परिवर्तन हासिल करने के उद्देश्य है। माननीय उपप्रधान मंत्री ने कहा कि यह प्राथमिक तौर से एक राजनैतिक,मानसिक, धार्मिक और कानूनी मसला है।

उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण रिश्तों के परिपालन करने के अवश्यकता के बारे में जोर दिया और कहा कि अत्याचार और नैराश्य विचार से ही आतंकवाद पैदा होते हैं। उन्होंने कहा कि कई प्रबल राष्ट्रों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थापनों से लोग निराश होते हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ अनुष्ठानों में घोषणा करने से नहीं बल्कि आतंकवाद को सामना करना है।

© विदेशी सूचना साधन,